Db – धन्य हैं वे वे, जो मन के दीन हैं हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है मत्ती ५५:३३-१२ और लूका और लूका और लूका
और लूका और लूका और लूका और लूका ६६:२०२०-२३ | 1

– Save This Page as a PDF–

धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं,

क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है

मत्ती ५:३-१२ और लूका ६:२०-२३

खोदाई: आपके लिए उपदेश की पृष्ठभूमि का सबसे महत्वपूर्ण पहलू क्या है? इन बचनो में सुख की कौन सी दो श्रेणियाँ दिखाई देती हैं? पहले चार उन लोगों के लक्षण हैं जिन्होंने किसके साथ संबंध में सच्ची धार्मिकता प्राप्त की है? अगली पाँच विशेषताएँ क्या हैं?

चिंतन: क्या मैं येहोवा के लिए अपनी आवश्यकता को पहचानता हूं और जानता हूं कि मुझे उसका प्यार अर्जित करने की आवश्यकता नहीं है? क्या मैं दूसरों को बता सकता हूं कि मुझे दुख हो रहा है और बिना शर्मिंदगी के दूसरों का दुख साझा कर सकता हूं? क्या मैंने परमेश्वर को अपने जीवन का स्टीयरिंग व्हील दिया है ताकि मुझे हर समय “जीतना” न पड़े? क्या मैं अपने निर्णय लेने में परमेश्वर के दृष्टिकोण की इच्छा रखता हूँ? क्या मैं किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रह सकता हूँ जो दुखी और अकेला है और उसके दर्द में मैं उसके साथ आ सकता हूँ? क्या मैं प्रभु और दूसरों के प्रति पूरी तरह से खुला और ईमानदार हो सकता हूं, पारदर्शी क्योंकि मेरे पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं है? क्या मैं क्रोध और असहमति की भावनाओं से तुरंत निपटता हूँ, उन्हें बढ़ने नहीं देता? क्या मैं अपने आस-पास के लोगों को किसी को ठेस पहुँचाए बिना अपने मतभेद दूर करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ? क्या मैं “गर्मी सहने” को तैयार हूं और जो सही है उसके लिए अकेला खड़ा हूं? क्या मैं आत्म-दया या आत्म-धार्मिकता महसूस किए बिना आलोचना स्वीकार कर सकता हूँ?

इस उपदेश की पृष्ठभूमि स्थापित करने के लिए चार बातें ध्यान देने योग्य हैं। सबसे पहले, यह यीशु में गहरी दिलचस्पी जगाने के बाद हुआ। उस समय तक, वह यह घोषणा करते हुए पूरे इज़राइल की यात्रा कर चुका था कि वह मसीहा है और कई चमत्कारों के साथ अपने दावों का समर्थन कर रहा था। दूसरा, यह उपदेश भी बारह प्रेरितों के चुने जाने के बाद हुआ। तीसरा, यह मौखिक व्यवस्था पर फरीसियों के साथ कई संघर्षों के बाद आया (Ei – मौखिक व्यवस्था देखें), और चौथा, यह यहूदी इतिहास का वह काल था जब यहूदी लोग मुक्ति की तलाश में थे (निर्गमन Bz – पुनरुद्धार पर मेरी टिप्पणी देखें). यह वह समय था जब इसराइल को रोमन उत्पीड़न के तहत बहुत पीड़ा झेलनी पड़ी थी। लोग किसी प्रकार की मसीहाई मुक्ति की तलाश में थे, मुख्य रूप से, रोमन उत्पीड़न से राष्ट्रीय मुक्ति। वे मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह आये और

Db – धन्य हैं वे वे, जो मन के दीन हैं हैं, क्योंकि स्वर्ग का
राज्य उन्हीं का है मत्ती ५५:३३-१२ और लूका और लूका और लूका
और लूका और लूका और लूका और लूका ६६:२०२०-२३ | 2

अपना राज्य स्थापित करे और रोमन जुए को उतार फेंके। तानाख के पैगम्बरों के अनुसार, धार्मिकता राज्य में प्रवेश का साधन थी। पर्वत पर उपदेश धार्मिकता के मानक की यीशु की व्याख्या है जिसकी टोरा ने मांग की थी, जो कि धार्मिकता की फरीसी व्याख्या के विपरीत है। इस प्रकार, यह खंड सच्ची धार्मिकता की विशेषताओं से संबंधित है।

ग्रीक शब्द का अनुवाद धन्य है जिसका अर्थ है खुश। इस खंड को अक्सर बीटिट्यूड्स (लैटिन में धन्य) कहा जाता है, जिसका पता पहले की यहूदी अवधारणा से लगाया जा सकता है। धन्य शब्द किसी भी यहूदी के लिए परिचित होगा जो तानाख का अध्ययन करते हुए बड़ा हुआ है। हिब्रू शब्द अश्रे सभी भजनों और सिद्दूर या प्रार्थना पुस्तक में आम है। मूल शब्द (हिब्रू: आशेर) का अधिक सटीक अर्थ खुश होगा, लेकिन किसी सतही लौकिक अर्थ में नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की सबसे पूर्ण वास्तविकता में। कुछ विशिष्ट आनंद अपने आप में अच्छे नहीं लगते; फिर भी यदि कोई व्यक्ति इन तरीकों से ईश्वर की इच्छा पूरी करता है, तो उसे एक आशीर्वाद और यहां तक कि खुशी की भावना भी मिलती है जो दुनिया नहीं दे सकती।

इसलिए, धन्य हैं वे लोग जिन्होंने सच्ची धार्मिकता प्राप्त की। हम इसे दो तरह से देख सकते हैं, ईश्वर और दूसरों के साथ अपने रिश्ते में। सबसे पहले, उन लोगों की चार विशेषताएं हैं जिन्होंने ईश्वर के साथ संबंध में सच्ची धार्मिकता प्राप्त कर ली है। उन्होंने अपने शिष्यों की ओर देखते हुए कहा:



१. धन्य हैं वे जो आत्मा के दीन हैं, क्योंकि
स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है (मत्ती ५:३; लूका ६:२०)। जबकि मत्ती कहता है: धन्य हैं वे जो आत्मा में दीन हैं, लूका कहता है: धन्य हैं आप जो गरीब हैं। पहली शताब्दी में गरीब शब्द का अर्थ आर्थिक स्थिति से था, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण को संदर्भित करने के लिए इसका प्रयोग लाक्षणिक रूप से भी किया जाता था। भजन ४०:१७ कहता है: परन्तु मैं कंगाल और दरिद्र हूं; क्या प्रभु मेरे बारे में सोच सकते हैं? तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है; मेरे परमेश्वर, देर मत करो (भजन ८६:१ और १०९:२२ भी देखें जहां डेविड ने खुद का वर्णन करने के लिए उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया था)! ये आर्थिक शब्द नहीं हैं क्योंकि राजा डेविड गरीब

Db – धन्य हैं वे वे, जो मन के दीन हैं हैं, क्योंकि स्वर्ग का
राज्य उन्हीं का है मत्ती ५५:३३-१२ और लूका और लूका और लूका
और लूका और लूका और लूका और लूका ६६:२०२०-२३ | 3

नहीं थे, इसलिए इस शब्द को रूपक के रूप में समझा जाना चाहिए। इसलिए, विनम्र होने की आध्यात्मिक स्थिति का वर्णन करने के लिए तानाख में गरीब का उपयोग किया जा सकता है और किया जाता है। आत्मा में गरीब होना गर्व के विपरीत है। जब हमारा परमेश्वर के साथ एक सही रिश्ता होता है तो हमारी अपनी कोई धार्मिकता नहीं होती। इसलिए, जो आत्मा में गरीब है वह पूरी तरह से परमेश्वर की धार्मिकता पर निर्भर है। जब हम टोरा की व्याख्या करते हैं तो शुरुआत करने का यही स्थान है। मसीहा के राज्य की खोज करने का अर्थ है कि हमें विनम्रतापूर्वक उसके लिए अपनी आवश्यकता का एहसास करना चाहिए। जो लोग स्वयं को इस प्रकार दरिद्र मानते हैं वे स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे।

२. धन्य हैं वे जो शोक मनाते हैं, क्योंकि उन्हें शान्ति मिलेगी (मत्ती ५:४)। अफसोस की बात है कि इज़राइल का शोक का एक लंबा इतिहास रहा है, क्योंकि उसने अपने दुश्मनों द्वारा कई परीक्षणों और हमलों को सहन किया है। उस पहाड़ पर मौजूद भीड़ हिब्रू शब्द अवल में व्यक्त अवधारणा से आसानी से जुड़ सकती थी, जो जीवन की त्रासदियों के प्रति एक आम प्रतिक्रिया है। यहां येशुआ का वादा भविष्यवक्ता यशायाह के समान है, जिसने इज़राइल को शोक के बजाय खुशी के तेल का वादा किया था (यशायाह ६१:३)। हालाँकि, इस संदर्भ में शोक मनाने का अर्थ पाप के प्रति संवेदनशील होना है। जो लोग पाप के प्रति संवेदनशील हैं वे स्वाभाविक रूप से अपने पापों को परमेश्वर के सामने स्वीकार करेंगे और उन पापों पर शोक मनाएंगे। धन्य हो तुम जो अब भूखे हो, क्योंकि तुम तृप्त होगे। धन्य हो तुम जो अब रोते हो, क्योंकि तुम हंसोगे (लूका ६:२१)। मसीहा को दी गई तल्मूडिक उपाधियों में से एक का नाम नैकेम है, जिसका अर्थ है दिलासा देने वाला, क्योंकि यह राजा मसीहा का एक महत्वपूर्ण मंत्रालय होगा (ट्रैक्टेट सैनहेड्रिन ९८बी)। येशुआ के बाद के शिक्षण में, हमें बताया गया है कि एक और दिलासा देने वाला हमारे पास भी आएगा – सत्य की आत्मा, जो सभी विश्वासियों के भीतर रहेगी (यूहन्ना १४:१५-१७)।

३. धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे भूमि के अधिकारी होंगे (मत्ती ५:५)। नम्र होने का मतलब कायर डोरमैट होना नहीं है; बल्कि, इसका अर्थ है ईश्वर में शांत विश्वास रखना, उसके अधिकार को पहचानना और उसके प्रति समर्पण करना। हिब्रू शब्द अनाव का तात्पर्य नियंत्रण में शक्ति से है। इस तरह के लोग धक्का-मुक्की या आत्म-केंद्रित नहीं होते हैं, बल्कि जानबूझकर अपनी शक्ति और अधिकारों को सीमित करते हैं। जिनके पास यह गुण है और वे परमेश्वर के अधिकार के प्रति समर्पण का जीवन जीते हैं, वे एक दिन भूमि प्राप्त करने के बाद अधिकार का प्रयोग करेंगे। इस वाक्यांश का तात्पर्य यहूदी लोगों से किए गए वादे के अनुसार इज़राइल की भूमि की भौतिक विरासत और सभी विश्वासियों के लिए मसीहाई साम्राज्य में शाश्वत जीवन की आध्यात्मिक विरासत दोनों है।

४. धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे (मत्ती ५:६)। धर्मी होने का अर्थ है पूर्ण ईश्वरीय मानक के अनुसार जीवन जीना।

Db – धन्य हैं वे वे, जो मन के दीन हैं हैं, क्योंकि स्वर्ग का
राज्य उन्हीं का है मत्ती ५५:३३-१२ और लूका और लूका और लूका
और लूका और लूका और लूका और लूका ६६:२०२०-२३ | 4

मसीह के शब्दों को सुनने वालों के लिए, मानक टोरा था। जो लोग परमेश्वर की वस्तुओं के भूखे हैं, वे तृप्त होंगे। तल्मूडिक परंपरा में मसीहा के आने वाले साम्राज्य का प्रसन्नतापूर्वक उल्लेख किया गया है। एक बहुप्रतीक्षित आकर्षण मसीहा का भोज होगा जिसके बारे में कहा जाता है कि यह ईडन के पुनर्स्थापित उद्यान में होगा। जैसे ही मेशियाक अपने छुड़ाए हुए लोगों को एक साथ इकट्ठा करता है, शराब का एक प्याला धन्य हो जाता है जो सृष्टि के दिनों से पुराना है। कहा जाता है कि राजा डेविड को स्वयं आशीर्वाद गाने का सम्मान प्राप्त था (पतई, पृष्ठ २३८-२३९)। लेकिन भले ही भौतिक भोज कितना भी महान क्यों न हो, यहां येशुआ मसीहा साम्राज्य में हमारी आध्यात्मिक भूख को पूरी तरह से संतुष्ट करने के महान आशीर्वाद पर जोर देता है।

दूसरा, उन लोगों की पाँच विशेषताएँ हैं जिन्होंने दूसरों के साथ संबंध में सच्ची धार्मिकता प्राप्त की है।

१. धन्य हैं वे, जो दयालु हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी (मत्ती ५:७)। दया का मतलब है कि आपको वह चीज़ नहीं मिलती जिसके आप हकदार हैं। हम सब अनन्त दण्ड के पात्र हैं क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं (रोमियों ३:२३), क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है (रोमियों ६:२३), परन्तु परमेश्वर इसमें हमारे लिए अपनी [दया] प्रदर्शित करता है : जब हम पापी ही थे, मसीह हमारे लिये मर गया (रोमियों ५:८)। इसलिए, यीशु सिखाते हैं कि जो लोग मसीहा के राज्य में प्रवेश करेंगे उनके पास यह गुण होना चाहिए जो स्वयं परमेश्वर के चरित्र को खूबसूरती से दर्शाता है। हम पर प्रभु की ओर से दया दिखाई जाएगी जैसे हम अपने आसपास के लोगों पर उसी प्रकार की दया दिखाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो येशुआ की दया को समझते हैं, जिन्होंने हमारे ऊपर से न्याय हटा दिया (देखें Bw – विश्वास के क्षण में परमेश्वर हमारे लिए क्या करते हैं), दूसरों का न्याय करने में धीमे होंगे।

२. अब आवश्यकताएँ और भी कठिन हो गई हैं: धन्य हैं वे जो हृदय के शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे (मत्ती ५:८)। हृदय में शुद्ध होना हमारे लिए असंभव लगता है। जैसा कि टोरा में दर्शाया गया है, हम सभी सही मानक से कमतर हैं (देखें Dg – टोरा का समापन)। वास्तव में, केवल मेशियाच ने ही इसे प्राप्त किया था! इसलिए हमारे सर्वोत्तम इरादों के साथ भी, हमारे कार्य और विचार एक धर्मी ईश्वर की आवश्यकताओं को पूरा करने के करीब नहीं आते हैं। यद्यपि हमें मसीह के स्वरूप में ढलते रहना चाहिए (रोमियों ८:२९), यह आशीर्वाद हमें स्पष्ट रूप से आश्वस्त करता है कि हमें परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है। यह केवल तभी होता है जब उसकी धार्मिकता हमारे खाते में जमा की जाती है (Fr – येशु जीबन की रोटी, युहन्ना ६:६३ में आरोप का सिद्धांत देखें) कि हम आने वाले राज्य का आनंद लेने की आशा भी रख सकते हैं। दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह न केवल हमें हाशेम के बारे में सिखाने के लिए आए थे, बल्कि वास्तव में मुक्ति की कीमत चुकाने के लिए आए थे (निर्गमन Bz – प्रायश्चित पर मेरी टिप्पणी देखें) ताकि हमें वादा किए गए मसीहा

Db – धन्य हैं वे वे, जो मन के दीन हैं हैं, क्योंकि स्वर्ग का
राज्य उन्हीं का है मत्ती ५५:३३-१२ और लूका और लूका और लूका
और लूका और लूका और लूका और लूका ६६:२०२०-२३ | 5

साम्राज्य में लाया जा सके।

३. धन्य हैं शांतिदूत, क्योंकि वे परमेश्वर की संतान कहलाएंगे (मत्ती ५:९)। स्वयं ईश्वर के अलावा, शालोम, या शांति एक ऐसी अवधारणा है जो शायद यहूदी लोगों के बीच सबसे अधिक पूजनीय है। हिब्रू शब्द शालोम शांति की यूनानी अवधारणा से बहुत अलग है। यूनानियों ने संघर्ष की अनुपस्थिति का वर्णन करने के लिए उस शब्द का उपयोग किया था। जब युद्ध रुका तो “शांति” हुई। हालाँकि, यहूदी संस्कृति में यह शब्द बहुत व्यापक और गहरा है। यह न केवल संघर्ष की अनुपस्थिति का वर्णन करता है, बल्कि पूर्णता, संतुष्टि और सकारात्मक आशीर्वाद की स्थिति का भी वर्णन करता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि जो लोग शालोम की तलाश करते हैं उन्हें ईश्वर की संतान कहा जाएगा। तो शांति स्थापना कैसी दिखती है? शांतिदूत वे हैं जो दूसरा गाल आगे कर देते हैं (मत्ती ५:३९), अतिरिक्त प्रयास करते हैं (मत्ती ५:४१), और अपने दुश्मनों से प्रेम करते हैं और उन लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं जो उन्हें सताते हैं (मत्ती ५:४३-४४)। हमें ऐसा क्यों करना चाहिए? क्योंकि ईश्वर शांति निर्माता है, और जब हम शांति स्थापित करते हैं तो हम ईश्वर की संतान कहलाते हैं। शांति स्थापना एक पारिवारिक चीज़ है।

४. धन्य हैं वे जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है (मत्ती ५:१ में, धार्मिकता से जीने का अर्थ है पूर्ण दैवीय मानक के अनुसार जीना। जो लोग वास्तव में परमेश्वर से प्यार करते हैं वे लगातार उनके मानक के साथ रहेंगे , जिसका परिणाम अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम होगा। वास्तव में, तोरा ने मांग की कि व्यक्ति को पहले ईश्वर से पूरी तरह प्रेम करना चाहिए, और फिर अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना चाहिए। यीशु ने स्वयं सिखाया कि ये दो सबसे बड़ी आज्ञाएँ हैं (मत्ती २२:३६-४०) . हालाँकि, येशुआ अपने शिष्यों को धार्मिकता का अनुसरण करते हुए सताए जाने के लिए तैयार रहने के लिए प्रोत्साहित करता है। वास्तविकता यह है कि दुनिया की प्रणाली ईश्वर की धार्मिकता की तलाश नहीं कर रही है। यह स्थिति नैतिकता का उपयोग करती है, धार्मिक मानक का नहीं, और अंधेरा प्रकाश से नफरत करता है। सच है मसीहा में विश्वास करने वाले उस दुनिया से उत्पीड़न की उम्मीद कर सकते हैं जो न तो ईश्वर को खोजती है और न ही समझती है।

५. हालांकि यह हमेशा आसान नहीं होता, मसीहा आश्वासन देता है कि स्वर्ग का राज्य हमारा है। वह विस्तार से यह भी कहता है: धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारा अपमान करते हैं, तुम्हें सताते हैं और तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकार की झूठी बातें कहते हैं (मत्ती ५:११)। विरोधी और दुनिया मसीहा और उसके बच्चों के पूर्ण मानकों और धार्मिकता से नफरत करते हैं। फिर भी, इसी कारण से हमें आनन्दित और आनंदित होने के लिए कहा गया है, क्योंकि हमारा बड़ा प्रतिफल स्वर्ग में है। हम इस वास्तविकता से भी सांत्वना पा सकते हैं कि उन्होंने उन भविष्यवक्ताओं को भी, जो तुमसे पहले थे, इसी प्रकार सताया था (मत्ती ५:१२)। इसलिए, धन्य हैं आप, जब लोग आपसे नफरत करते हैं, जब वे आपको छोड़ देते हैं और आपका अपमान करते हैं, और मनुष्य

Db – धन्य हैं वे वे, जो मन के दीन हैं हैं, क्योंकि स्वर्ग का
राज्य उन्हीं का है मत्ती ५५:३३-१२ और लूका और लूका और लूका
और लूका और लूका और लूका और लूका ६६:२०२०-२३ | 6

के पुत्र के कारण आपके नाम को बुरा मानते हैं (लूका ६:२२)। उस दिन आनन्द करो, और आनन्द से उछलो, क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है। क्योंकि उनके पूर्वजों ने भविष्यद्वक्ताओं के साथ ऐसा ही व्यवहार किया था (लूका ६:२३)। पाँचवाँ आशीर्वाद उन लोगों के लिए है जो उत्पीड़न के बावजूद धार्मिकता का जीवन जीने का प्रयास करते हैं। धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं। यदि येशुआ को उन लोगों पर सताया गया था जिन्हें सुसमाचार से खतरा था, तो क्या जो लोग उसके साथ पहचान रखते हैं वे इससे कम की उम्मीद कर सकते हैं?

इस बिंदु तक सब कुछ सीधे टोरा की व्यवस्था से संबंधित रहा है (मेरी टिप्पणी देखें निर्गाममं Da – टोरा की व्यवस्था), लेकिन यहां वह मसीह के आगमन के प्रकाश में एक और कदम जोड़ता है। हमें उसे राजा मसीहा के रूप में स्वीकार करना चाहिए, इससे उत्पीड़न तो होगा ही, राज्य में महान पुरस्कार भी मिलेगा।

१९१५ में पादरी विलियम बार्टन ने लेखों की एक श्रृंखला प्रकाशित करना शुरू किया। एक प्राचीन कथाकार की पुरातन भाषा का उपयोग करते हुए, उन्होंने अपने दृष्टान्तों को सफेड द सेज के उपनाम से लिखा। और अगले पंद्रह वर्षों तक उन्होंने सफ़ेद और उसकी स्थायी पत्नी केतुराह के ज्ञान को साझा किया। यह एक ऐसी शैली थी जिसका उन्होंने आनंद लिया। कहा जाता है कि १९२० के दशक की शुरुआत तक सफ़ेद के अनुयायियों की संख्या कम से कम तीन मिलियन थी। एक सामान्य घटना को आध्यात्मिक सत्य के चित्रण में बदलना हमेशा बार्टन के मंत्रालय का मुख्य विषय रहा है।

अब ऐसा हुआ कि मैंने कैलिफोर्निया नामक एक सुदूर देश की यात्रा की। और वहाँ मुझे एक दोस्त मिला, जो उस देश का नागरिक था, और उसके पास एक ऑटोमोबाइल था, और वह मुझे ऑरेंज ग्रोव्स और अंगूर फलों के बगीचे, और अंगूर के बगीचे, और कई पेड़ दिखाने के लिए तेजी से यात्रा पर ले गया जिन पर प्रून उगते थे।

और ऐसा हुआ कि मैंने अक्सर कोरोना नामक शहर के बारे में सुना, और हमेशा इसके बारे में यही कहा जाता था: कोरोना, नींबू का घर।

अब एक दिन जब हम कोरोना से गुज़रे, और वह दिन गर्म और धूल भरा था, और मैंने अपने दोस्तों से बात की:

देखो, यह कोरोना है, नींबू का घर। आइए हम रुकें, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं, क्योंकि नींबू मनगढ़ंत और एक स्वादिष्ट पेय है जो दिल को खुश करता है और नशा नहीं करता है।

तो हम सड़क से गुज़रे, और हम एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ लिखा था: आइसक्रीम, सोडा पानी, रविवार और सभी प्रकार के शीतल पेय।

Db – धन्य हैं वे वे, जो मन के दीन हैं हैं, क्योंकि स्वर्ग का
राज्य उन्हीं का है मत्ती ५५:३३-१२ और लूका और लूका और लूका
और लूका और लूका और लूका और लूका ६६:२०२०-२३ | 7

और हम रथ पर से उतरकर भीतर गए, और क्या देखा, कि श्वेत अंगोछा पहिने हुए एक पुरूष है।

और मैं उस से बोलने ही वाला था, परन्तु मेरे मित्र ने कहा, चुप रह, और अपना धन अपनी जेब में रख; मैं इसके लिए भुगतान कर रहा हूं.

और मैं अपनी इच्छा से चुप रहा, क्योंकि ये सुनने में मनभावने वचन हैं।

फिर मेरे दोस्त ने सफेद एप्रन पहने आदमी से कहा: जल्दी करो, बेटे, और हमारे लिए चार अच्छे, बर्फ-ठंडे नींबू पानी तैयार करो, और उन्हें अच्छा बनाओ, और उन्हें जल्दी से बनाओ।

और सफेद एप्रन पहने हुए व्यक्ति ने उसे ऐसे सुना जैसे उसने जो कहा वह उसे समझ में नहीं आया।

फिर मेरे दोस्त ने दोबारा कहा: मेरा यह दोस्त शिकागो से है, और ये अन्य दोस्त बोस्टन से हैं, और उन्हें लगता है कि वे जानते हैं कि अच्छा नींबू पानी क्या है; लेकिन मैं चाहता हूं कि वे नींबू पानी यानी लेमोनेड पिएं। जल्दी करो, और इसे उनके लिये तैयार करो।

फिर सफेद एप्रन पहने व्यक्ति बोला: हमारे पास नींबू पानी नहीं है।

और कैलिफ़ोर्निया के आदमी का चेहरा लाल हो गया, और उसने कहा: क्या? कोरोना में नींबू पानी नहीं, नींबू का घर?

और सफेद एप्रन पहने व्यक्ति ने उत्तर दिया, हमारे पास सोडा वाटर, रूट बीयर, जिंजर एले, आइसक्रीम है, लेकिन नींबू पानी नहीं है।

फिर मेरा दोस्त बोला: जल्दी से किराने की दुकान पर जाओ, और आधा दर्जन अच्छे नींबू खरीदो, और जल्दी से हमारे लिए नींबू पानी बनाओ।

और सफेद एप्रन वाला आदमी जल्दी से लौटा, और कहा: शहर में एक भी नींबू नहीं है। वे उन सभी को शिकागो और बोस्टन भेजते हैं।

और जब मैंने यह सुना तो मैंने ध्यान किया, और मैंने कहा: मुझे समुद्र तट पर अच्छी मछली और देश में ताजे अंडे की कमी का सामना करना पड़ा है, जब दोनों शहर में प्रचुर मात्रा में थे, और अब मैं देखता हूं कि अच्छा नींबू पानी खरीदने के लिए वह जगह है जहां वे नींबू नहीं उगाते।

और जैसे ही मैंने ध्यान किया, मुझे याद आया कि कई अन्य चीजों में मोची का परिवार

Db – धन्य हैं वे वे, जो मन के दीन हैं हैं, क्योंकि स्वर्ग का
राज्य उन्हीं का है मत्ती ५५:३३-१२ और लूका और लूका और लूका
और लूका और लूका और लूका और लूका ६६:२०२०-२३ | 8

बेईमान हो जाता है। हाँ, यह मेरे लिये दृष्टान्त के समान होगा, ऐसा न हो कि मैं दूसरों को उपदेश देकर त्याज्य बन जाऊँ।

इसलिए मैंने संकल्प लिया कि सुसमाचार के अपने सभी निर्यात के साथ, मैं इसका कुछ हिस्सा घरेलू उपभोग के लिए रखूंगा।